11303 / 2717

मूल्यांकित उत्तरपुस्तिका

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य
(Hindi Literature)

टेस्ट–2

(प्रश्न पत्र–II)

DTVF / OPT-23 **M1-HL2**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

नाम (Name): भानु प्रताप सिंह

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): [redacted]

ई-मेल पता (E-mail address): [redacted]

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 27-[illegible]-23

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	2	1	3	1	9	5

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

There are EIGHT questions divided in TWO SECTIONS.

Candidate has to attempt FIVE questions in all.

Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any THREE are to be attempted choosing at least ONE question from each section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answer must be written in HINDI (Devanagari Script).

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 146

टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures) E516

पुनरीक्षणकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

उत्तर अच्छे हैं।
लेखन-शैली अच्छी है।
भूमिका निष्कर्ष ठीक है।
भाषा प्रवाहपूर्ण है।
उत्तरों का प्रस्तुतीकरण अच्छा है।

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) हिन्दी साहित्येतिहास को ग्रियर्सन की देन

ग्रियर्सन 'गार्सा द तासी' के पश्चात साहित्येतिहास लेखन में महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व है। उन्होंने अपने ग्रंथ 'द मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ नार्दन हिन्दोस्तान' में निम्न प्रकार से साहित्येतिहास लेखन में योगदान दिया।

(क) ग्रियर्सन ने कवियों के परिचयात्मक विवरण के साथ उनके काव्य का काव्यशास्त्रीय विश्लेषण का प्रयास किया।

(ख) ग्रियर्सन ने ही सर्वप्रथम 'कालविभाजन' का वैज्ञानिक प्रयास किया। इनके पहले 'काल विभाजन' का अभाव है।

(ग) ग्रियर्सन ने कवियों को 'वर्णक्रमानुसार' के स्थान पर 'कालानुसार' में वर्गीकृत किया।

A3

(ग) ग्रियर्सन ने ही सर्वप्रथम भक्तिकाल को 'स्वर्णकाल' की संज्ञा दी जो अब तक मान्य है।

हालांकि ग्रियर्सन की दृष्टि कुछ सीमाओं से ग्रस्त है जैसे उनका कालविभाजन याद्दृच्छिक है जैसे कंपनी के शासन में हिंदोस्तान, विक्टोरिया का शासन इत्यादि। ग्रियर्सन ने साहित्य का साँप्रदायिक विभाजन किया। उर्दू को हिन्दी से और उर्दू साहित्य को हिंदी साहित्य से श्रेष्ठ साबित करने का प्रयास किया।

कुछ सीमाओं के बावजूद ग्रियर्सन का प्रयास महत्वहीन नहीं है।

(ख) घनानंद की काव्य-भाषा

रीतिकालीन रीतिमुक्त काव्य परंपरा के प्रमुख कवि घनानन्द 'प्रेम की पीर' के कवि के रूप में जाने जाते हैं। इनकी काव्यभाषा विशिष्ट है इसके कारण इन्हें 'भाषा प्रवीन' का नाम मिला है।

आचार्य शुक्ल के अनुसार-" रीतिकाल के कवियों में एक प्रकार की भाषाई अराजकता विद्यमान है पर घनानंद की भाषा एकदम स्वच्छ व प्रांजल है" घनानंद की काव्यभाषा की निम्न विशेषताएं है।

(क) इनकी भाषा 'विशुद्ध ब्रजभाषा' है जिसमें अन्य बोलियाँ यथा देशज, विदेशज का प्रभाव नगण्य है।

(ख) नंददास की भाषा बिहारी की तरह 'दरबारी सजगता' की उपज नहीं है। बल्कि भावों की गहराई से उत्पन्न है। उदाहरणार्थ-

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"उजरनि बसी है हमारी अंखियाँनि देखो"

(ग) रीतिकाल के अधिकांश कवि शास्त्रीय चमत्कार के लिए उपमानों, बिंबों और अलंकारों का प्रयोग करते हैं पर घनानंद के यहाँ ये अनुभूतिप्रवणता से आए हैं।

(घ) घनानंद ने 'लक्षणा', 'व्यंजना' के साथ साथ लोकोक्तियों, मुहावरों का भी जमकर प्रयोग किया है। यथा -

"तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो लला, मन लेहु पै देहु छटांक नहीं"

समग्रतः आचार्य शुक्ल ने कहा है "कि अपनी भावनाओं के अनूठे रूपरंग की व्यंजना के लिए भाषा का ऐसा बेधड़क प्रयोग करने वाला हिंदी के पुराने कवियों में दूसरा कोई नहीं"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) मनोवैज्ञानिक कहानी

हिन्दी में मनोवैज्ञानिक कहानियों का लेखन मुख्यतः जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी और अज्ञेय के यहाँ मिलता है।

मनोवैज्ञानिक कहानियाँ अपनी वैचारिक ऊर्जा फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद से ग्रहण करती हैं। फ्रायड का मानना है कि मनुष्य की मूल प्रवृत्ति 'लिबिडो' या कामचेतना है। इसलिए उसकी प्रवृत्तियों का अध्ययन चेतन के स्थान पर अचेतन व अवचेतन के स्तर पर करना चाहिए। मनुष्य का सामाजिक व्यवहार वस्तुतः 'इड', 'इगो' और 'सुपर इगो' की क्रिया-प्रतिक्रिया से निर्मित होता है इसलिए व्यक्ति और समाज की मनोग्रंथियों का अध्ययन का आधार भी यही है।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हिन्दी में फ्रायड के विचार जैनेन्द्र इलाचन्द्र जोशी तथा अज्ञेय के यहाँ आए हैं। हालाँकि इन रचनाकारों ने अन्य विचारधाराओं को घुला मिलकर मनोवैज्ञानिक कथाएँ लिखी हैं।

जैसे जैनेन्द्र के ने फ्रायड के साथ गांधी को घुला मिला दिया है। अज्ञेय ने फ्रायड के साथ एडलर युंग, टी.एस. इलियट को लाकर खड़ा कर देते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिक कहानियाँ इस प्रकार हैं।

जैनेन्द्र → पाजेब, जाह्नवी, अनन्त

इलाचन्द्र जोशी → धूप रेखा

'अज्ञेय' → विपथगा, जयदोल, पठार का धीरज।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

(घ) छायावाद के नए अलंकार

छायावादी कवि रीतिवादी कवियों की तरह परंपरा से बद्ध अलंकारवादी नहीं हैं। बल्कि वे स्वच्छंद, स्वतन्त्र और गहन अनुभूति से कविता लिखते हैं। इसलिए उनके द्वारा प्रयुक्त अलंकार 'सहज' रूप में आये हैं, चमत्कृति के लिए नहीं।

पंत ने पल्लव की भूमिका में कहा भी है कि "अलंकार भावों के विशेष द्वार हैं"

छायावाद में शब्दालंकार से अधिक अर्थालंकार हैं। ये अर्थालंकार चमत्कार के लिए नहीं बल्कि अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए आए हैं।

छायावाद में निम्न नए अलंकार मिलते हैं।

1. मानवीकरण : छायावादी कवि प्रकृति या भावों

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

को मानव रूप में अभिव्यक्त करते हैं। उदाहरणार्थ

"मेघमय आसमान से उतर रही है
संध्या सुन्दरी परी सी धीरे-धीरे-धीरे"

2. विशेषण-विपर्यय : छायावाद में विशेषण विचित्र एवं अस्वाभाविक विशेष्य के साथ प्रयुक्त हो जाते हैं। जैसे -

"वेदना के सुरीले हाथों से"

3. ध्वन्यार्थ व्यंजना : छायावादी कवि ध्वनियों के प्रयोग से अर्थ को गहन और गाढ़ा बना देते हैं। यथा

"झर-झर-झर-निर्झर गिरि सर से"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ङ) हिन्दी का प्रगतिवादी उपन्यास

हिन्दी की प्रगतिवादी उपन्यास धारा प्रेमचंदोत्तर हिंदी परंपरा की मुख्य धारा है।

प्रगतिवादी लेखक अपनी वैचारिक ऊर्जा मूलतः मार्क्सवादी दर्शन से ग्रहण करते हैं। इस कारण उनकी रचनाओं में मुख्यतः गरीबी, शोषण, क्रांति चेतना, शोषक-शोषित का टकराव, मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष आदि व्यक्त हुआ है।

ये रचनाकार 'रूप' (शिल्प) से अधिक 'वस्तु' को महत्व देते हैं। इसलिए इनके उपन्यासों में आम आदमी की बोलचाल वाली भाषा मिलती है। प्रतीकात्मकता और रहस्यवादिता का निषेध इन उपन्यासों में मिलता है।

हिन्दी में प्रगतिवादी उपन्यास

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(प्रगतिवादी) धारा के मुख्य रचनाकार 'यशपाल' हैं। उनके उपन्यास 'दादा कॉमरेड', 'पार्टी कॉमरेड' 'झूठा सच' तथा 'दिव्या' प्रगतिवादी उपन्यास के मुख्य आधार है।

इसके अतिरिक्त रांगेय राघव (कब तक पुकारूं), नागार्जुन (बलचनमा, रतीनाथ की चाची) आदि प्रमुख प्रगतिवादी उपन्यासकार हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

2. (क) "आध्यात्मिक रंग के चश्मे आजकल बहुत सस्ते हो गए हैं। उन्हें चढ़ाकर जैसे कुछ लोगों ने गीतगोविन्द को आध्यात्मिक संकेत बताया है, वैसे ही विद्यापति के इन पदों को भी।" इस मत के आलोक में विद्यापति-पदावली के पदों की मूल चेतना पर प्रकाश डालिये। 20

विद्यापति आदिकाल के प्रमुख कवि हैं। इनकी प्रमुख रचना 'पदावली' में अभिव्यक्त इनकी 'भक्ति भावना' पर विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वान इन पदों को 'शृंगारिक' मानकर विद्यापति की भक्ति भावना को 'राधिका कन्हाई सो बहानो है' कहते हुए खारिज करते हैं, तो वहीं कुछ विद्वान पदावली को भक्ति की रचना ही मानते हैं।

आचार्य शुक्ल 'पदावली' के पदों के संबंध में कहते हैं - "आध्यात्मिक रंग के चश्मे आजकल बहुत सस्ते हो गये हैं। उन्हें चढ़ाकर जैसे कुछ लोगों ने गीतगोविन्द में आध्यात्मिक संकेत बताया है, वैसे ही विद्यापति के इन पदों को

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

भी।

रामकुमार वर्मा, निराला आदि विद्वान भी आचार्य शुक्ल के तर्क से सहमत हैं। इन विद्वानों ने निम्न तर्कों के माध्यम से विद्यापति की भक्ति भावना को खारिज किया है। - पहला तर्क यह कि पदावली में शृंगार के केवल संयोग वर्णन पर ही बल है। यह संयोग वर्णन अश्लीलता से अधिक प्रेरित है। ईश्वर की अश्लील शृंगारिक उक्तियां किस प्रकार की भक्ति है।

दूसरा तर्क यह कि विद्यापति मूलतः शैव थे। इन्हें भक्ति ही करनी थी तो शिव-पार्वती की करते, न कि राधा कृष्ण की। अंतिम तर्क यह है कि पदावली के अधिकांश पदों के अंतिम वाक्य में 'राजा शिवसिंह रूपनारायण लखिमा देई पति माने' वाक्य आया है। जो स्पष्ट करता है कि कवितावली भक्ति से अधिक शृंगारिक है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

पदावली को (भक्ति काव्य) ~~[illegible]~~ मानने वालों में जार्ज ग्रियर्सन, डा. श्यामसुंदर दास आदि प्रमुख हैं। इन विद्वानों का मत है कि यदि विद्यापति के पद शृंगारिक होते तो इन्हें मंदिरों में क्यों गाया जाता। पुनः बाद के कवियों ने विद्यापति को भक्त के रूप में ही स्मरण किया है। इन पदों को सुनकर 'चैतन्य महाप्रभु' तक भावविभोर हो जाते थे।

वस्तुतः इस विवाद का कोई सर्वमान्य हल सम्भव नहीं दिखता है। बेहतर होगा कि हम इन्हें ~~[illegible]~~ 'शृंगार समन्वित भक्ति' पर मान लें।

[illegible] 11½/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

(ख) रीतिकालीन कवियों के आचार्यत्व पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रीतिकालीन कवियों के संबंध में यह विवाद है कि उन्हें आचार्य माना जाए या नहीं। आचार्य शुक्ल का मत है कि - "रीतिकालीन लक्षण-ग्रंथपरंपरा के तमाम कवियों को आचार्य नहीं माना जा सकता" इस मत के विरुद्ध डा. नगेन्द्र आदि विद्वान लक्षण-ग्रंथ परंपरा कवियों को आचार्य मानने पर बल देते हैं।

हिन्दी काव्यशास्त्र में आचार्य मानने की कुछ कसौटियों के आधार पर रीतिकालीन कवियों के आचार्यत्व का विश्लेषण किया जा सकता है।

पहली श्रेणी में उन विद्वानों को आचार्य माना जाता है जो नवीन सिद्धान्तों की उद्भावना करे जैसे- आचार्य भरतमुनि।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

किंतु रीतिकालीन कवियों ने किसी मौलिक सिद्धांत की सर्जना नहीं की।

दूसरे अर्थ में उन विद्वानों को आचार्य माना जा सकता है जो प्रचलित सिद्धांतों की मौलिक व्याख्या करे और उसमें उपस्थित विसंगतियों को दूर करे। रीतिकालीन कवियों के पास काव्यशास्त्र, नायिकाभेद में उपस्थित तमाम विसंगतियों को विश्लेषित, विवेचित करने का मौका था। पर उन्होंने ऐसा नहीं किया।

ऐसे व्यक्ति भी आचार्य माने जा सकते हैं जिनका चरित्र पवित्र और अनुकरणीय है। किंतु इस श्रेणी में भी रीतिकवियों का कोई स्थान नहीं। उनकी कविताएँ जिस देहमूलक शृंगारिक और सर्वोपभोगी वातावरण में डूबी है। उनका चरित्र अनुकरणीय नहीं कहा जा सकता है।

आज हम अपनी दृष्टि थोड़ी

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संकुचित कर दते गे। ऐसे कवियों को आचार्य मान सकते हैं जिन्होंने संस्कृत परंपरा की जटिल सैद्धान्तिक प्रणालियों को सरल, सुबोध परंपरा में जनता को उपलब्ध कराया हो। इस श्रेणी में रीतिकालीन कवि आचार्य माने जा सकते हैं क्योंकि उन्होंने लक्षण ग्रंथ परंपरा में संस्कृत काव्यशास्त्र यथा (नायिका भेद, अलंकार आदि को सरल भाषा में प्रस्तुत किया।

समग्रत: रीतिकालीन कवियों का आचार्यत्व लक्षणग्रंथ रचना के कारण असंदिग्ध है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

15

(ग) रासो काव्यों की भाषा पर प्रकाश डालिये।

रासो काव्यधारा आदिकालीन काव्यधारा की प्रमुख काव्यधारा है। रासो काव्यों का प्रणयन 8-9वीं सदी से 13-14वीं सदी तक मिलता है इसलिए इनकी भाषा वैविध्यपूर्ण है।

रासो काव्यों की भाषा को दो आधारों पर समझा जा सकता है। पहला 'कालगत' आधार पर दूसरा 'प्रवृत्तिगत' आधार पर

काल के आधार पर रासो रचनाएँ आरंभिक जैन, बौद्ध कवियों की हैं। जिनकी भाषा 'प्राकृताभास अपभ्रंश' के नज़दीक है परवर्ती काल की रचनाएँ; जिनके नामक के अन्त में 'रासक' शब्द मिलता है। की भाषा आरंभिक अपभ्रंश' है। जैसे 'सन्देश रासक'।

इसके बाद के समय की रचनाओं

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की भाषा 'परिनिष्ठित अपभ्रंश' है और अंतिम चरण में रासो काव्यों की भाषा 'आरंभिक हिन्दी' के समान है। कुछ रचनाओं में तो ये आधुनिक हिन्दी के समान स्वरूप लिए है। 'परमालरासो' का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

"बारह बरस लौ कुकर जीवें, औ तेरह लौ जिएं सियार
बरस अठारह क्षत्रिय जीवें, आगे जीवन को धिक्कार"

प्रवृत्तिगत आधार पर रासो काव्यों में दो प्रवृत्तियाँ हैं 'डिंगल' और 'पिंगल'।
डिंगल ओजगुण प्रधान भाषा शैली है जो वीररस की अभिव्यक्ति में प्रयुक्त हुयी है। युद्ध के दृश्यों में डिंगल भाषा मिलती है। उदाहरणार्थ पृथ्वीराजरासो का यह उदाहरण द्रष्टव्य है- 'उट्ठिराज पृथ्वीराज बाग मनो वीर

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नट।'

पिंगल भाषा मूलतः श्रृंगारिक, कोमल, भाव-प्रधान अभिव्यक्तियों में आयी है। ब्रजभाषा का मूल पिंगल में ही है। डिंगल और पिंगल भाषाएं काव्यों में एकसाथ उपस्थित हैं जो दृश्य, रस के अनुसार प्रयुक्त हुयी है।

समग्रतः रासो काव्यों की भाषा वैविध्यपूर्ण है।

9/15

Copyright – Drishti The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'हिन्दी सूफी काव्यधारा ने हिन्दुओं व मुसलमानों को साहचर्य व प्रेम में रहने की मानसिकता प्रदान की।' इस मत का अनुशीलन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिन्दी की सूफीकाव्यधारा में हिन्दू-मुस्लिम साहचर्य, प्रेम समन्वय की चेष्टा सर्वाधिक है। कबीर ने हिन्दू-मुस्लिम धर्मों में व्याप्त कुरीतियों पर चोट की लेकिन इनके सांस्कृतिक समन्वय पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। सूरदास भी कृष्ण भक्ति अधिक रमे दिखायी देते हैं। उनकी कविता समाज से इतना अधिक नहीं जुड़ पाती। इसी तरह तुलसीदास की मूल चिंता में हिन्दू धर्म के आंतरिक अंतर्विरोध अधिक हैं न कि हिंदू-मुस्लिम।

हिन्दी काव्यधारा की सूफी काव्यधारा एकमात्र धारा है जिसमें सांस्कृतिक-धार्मिक समन्वय की प्रबल चेष्टा विद्यमान है। इस चेष्टा को निम्न आधारों पर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

समझ सकते हैं।

दार्शनिक

1. सूफी कवि 'इस्लामिक आधार' में भारतीय नव्यवेदांती तत्व या 'अहम् ब्रह्मास्मि' का तत्व शामिल करके 'अनल-हक' की घोषणा करते हैं। भारतीय समाज के लिए चिरपरिचित यह विचार दोनों धर्मों में वार्ता के द्वार खोल देता है।

2. सूफी 'मानुष प्रेम भयउ बैकुण्ठी' को अत्यधिक महत्व देते हैं। यह 'प्रेम तत्व' समन्वय की नयी राह खोल देता है।

3. सूफी कवि अपनी 'रहस्यवादी अनुभूति' के लिए भारतीय समाज में प्रचलित लोककथाएँ लेते हैं। इसके साथ ही वे भारतीय मिथकों को भी रचनाओं में उपस्थित करते हैं। पद्मावत में पद्मावति

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

की लोककथा में शिव-पार्वती आदि का आना सूफी कवियों सांस्कृतिक समन्वय की इच्छा का परिणाम है।

4. सूफी कवियों ने अधिकांश रचनाएँ अवधी में की जो अवध क्षेत्र की लोक भाषा है। इसके साथ उन्होंने 'अरबी' लिपि होते हुए भी दोहा, चौपाई की कड़वक बद्ध शैली और भारतीय काव्य-रूढ़ियां यथा नख-शिख वर्णन, बारहमासा आदि को अपने काव्य रचना का आधार बनाया।

5. सूफी काव्य में भारतीय त्यौहारों यथा 'होली-दीवाली' के साथ व्यंजन, खान-पान, लोक प्रचलित मुहावरे भी शामिल

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

है।

5. सूफियों ने अपने भावनात्मक रहस्यवाद के साथ भारतीय 'साधनात्मक रहस्यवाद' को भी घुलाया मिलाया।

समग्रतः भारत की गंगा-जमुनी तहज़ीब के निर्माण में सूफी कवियों का निर्णायक योगदान है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी की मनोवैज्ञानिक उपन्यासधारा पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी मनोवैज्ञानिक उपन्यास धारा प्रेमचंदोत्तर काल की प्रमुख उपन्यास धारा है।

मनोवैज्ञानिक उपन्यासधारा अपनी वैचारिक ऊर्जा फ्रायड के मनोविश्लेषण वाद से ग्रहण करती है। फ्रायड का मानना है कि मनुष्य की मूल प्रवृत्ति लिबिडो या काम चेतना है अतः किसी व्यक्ति का विश्लेषण उसके चेतन के बजाय अचेतन और अवचेतन के स्तर पर करना चाहिए।

हिन्दी में मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के प्रमुख लेखक जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय आदि हैं। इन रचनाकारों में इलाचन्द्र जोशी के यहाँ 'फ्रायड के विचार' अपने मूल रूप में मिलते हैं जबकि जैनेन्द्र ने फ्रायड के साथ गांधी

Copyright – Drishti The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को और अज्ञेय ने फ्रायड के साथ टी.एस.इलियट और सार्त्र को घुला मिला दिया है।

इन उपन्यासों में व्यक्ति के बाह्य की जगह अंतर्मन का विश्लेषण अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। व्यक्ति के मन के अन्तर्द्वंदों की सूक्ष्म परतों का उद्घाटन इन उपन्यासों में मिलता है।

अंतर्मन के महत्वपूर्ण होने से कथानक बिखर गया है और बाह्य घटनाओं की जगह मन के रहस्यों ने ली है। मन के जटिल तत्वों की अभिव्यक्ति के कारण इन उपन्यासों की भाषा प्रतीकात्मक हो गयी है। जैनेन्द्र के एक उपन्यास की नायिका इसीलिए कहती है- "मैं चिड़िया होना चाहती हूँ"

इन उपन्यासों में चिंतन, मनन, विश्लेषण प्रमुख हो गया है। अज्ञेय के उपन्यास 'शेखर एक जीवनी' में घटनाएँ बेहद विरल हैं।

पर विश्लेषण कई कई पृष्ठों तक फैला हुआ है।

कुछ मनोवैज्ञानिक उपन्यास निम्न हैं-

जैनेन्द्र - सुनीता, परख, त्यागपत्र

इलाचन्द्र जोशी - संन्यासी, जहाज का पंछी

अज्ञेय - 'शेखर एक जीवनी', नदी के द्वीप

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

15 (ग) हिंदी के नवगीत आन्दोलन का परिचय दीजिये।

नवगीत आंदोलन आधुनिक कविता का एक आन्दोलन है। यह आन्दोलन हिन्दी में 'गीतों की रचना' की पुनर्प्रतिष्ठा के समर्थन में उपजा है।

नवगीत आन्दोलन नई कविता के एक विचार में उपजा है। नई कविता मानती है कि आधुनिक जीवन इतना जटिल और विश्लेषणपरक है कि इसे गीत जैसे प्रवाह, भावुकता और शिल्प विधान में पूर्णतः अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता।

नवगीत के समर्थक उपर्युक्त विचार का विरोध करते हैं और मानते हैं कि गीत अप्रासंगिक विधा नहीं है। गीतों में इतना लचीलापन और संभावनाएँ हैं कि वह आधुनिक जीवन की जटिल अभिव्यक्तियों को भी

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

धारण कर सके।

'रमेश रंजक' और 'रवीन्द्र भ्रमर' इस काव्यांदोलन के प्रमुख प्रस्तावक हैं। इस आंदोलन की भावगत विशेषताओं में सभी विचारधाराओं से मोहभंग, आज़ादी से मोहभंग, लोकतन्त्र का भीड़तन्त्र में बदलना, वंचित वर्गों के प्रति करुणा, लोक जीवन और लोक धुनों के प्रति आकर्षण आदि विशेषताएं मिलती हैं। 'नवगीत' का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

"जलती न कोई आग है, दिखता न कोई राग है
केवल सुलगती है चिता, इस गीत के आकार में।"

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) केशव: कठिन काव्य के प्रेत

आचार्य शुक्ल के अनुसार "केशव के पीछे संस्कृत विद्वानों की कम से कम तीन पीढ़ियां थी। केशव स्वयं संस्कृत के भारी विद्वान थे"। केशवदास स्वयं कहते हैं।

"भाषा बोलि न जानहिं जिनके कुल के दास
भाषा कवि भो मंदमति, तेहि कुल केशवदास"

यह विद्वता केशव के काव्य में दोष बनकर उभरी है। आचार्य शुक्ल इस कठिनता को भाषा के स्तर पर पद-न्यूनता, वाक्य न्यूनता तथा अलंकार व फालतू शब्दों के प्रयोग के स्तर पर दिखते हैं। उदाहरणार्थ-

"सीधी। सी। धौ।
राम। नाम। स्त्प। धाम" (पद-न्यूनता)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसीलिए 'डा. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल' कहते हैं -
" केशव की भाषा काव्योपयोगी नहीं है "

काव्य की कठिनता का दूसरा स्तर कवित्त योजना में है। आचार्य शुक्ल के अनुसार केशव में संबंध निर्वाह कौशल का अभाव है वे काव्य के मार्मिक स्थल नहीं पहचान पाते।

केशव के काव्य में कठिनाई इसलिए भी है कि वे एक साथ इतिहासकार, साहित्यकार व आचार्यत्व इत्यादि भूमिकाओं को साध लेना चाहते हैं। वे 'कविप्रिया' और 'रसिक प्रिया' रचनाओं में कठिन कल्पनाएं करते हैं। केशव के छंद वैविध्य भी कठिन है आचार्य शुक्ल केशव के काव्य को 'छंदों का अजायबघर' कहते हैं।

हालांकि रामचन्द्रिका की संवाद योजना, विभिन्न स्तरों पर मौलिकता केशव की शक्ति हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) विद्यापति की राधा

विद्यापति की राधा कई अर्थों में हिन्दी काव्य में वर्णित राधा से भिन्न, मौलिक व विशिष्ट है।

विद्यापति की राधा की महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि राधा का महत्व कृष्ण के ही समान है। कहीं-कहीं राधा कृष्ण से भी अधिक महत्व धारण करने लगती है।

सूरदास ने राधा को 7 वर्षीय बालिका के रूप में दर्शाया है। जबकि विद्यापति ने राधा को किशोरी नायिका के रूप में इसलिए राधा के चरित्र में आई सहजता, चंचलता तथा जिज्ञासा उन्हें परंपरा में विशिष्ट बनाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

विद्यापति की राधा का शरीर ही नहीं मन भी अत्यधिक सुन्दर है। वे कृष्ण के प्रेम में एकनिष्ठ और प्रतिबद्ध हैं। यह प्रतिबद्धता कई स्तरों पर 'भागवती' और सूर की गोपियों से भी अधिक शुद्ध और दृढ़ है।

राधा कहती है-

"हे सखि देखल एक अपरूप
सुनइत, मानव सपन स्वरूप"

राधा आजीवन कृष्ण को देखना चाहती है-
यथा - "जनम अवधि भर रूप निहारल
नयन न तिरपित भेल"

समग्रतः विद्यापति ने संस्कृत काव्यधारा से राधा को लिया और हिन्दी काव्यधारा को सौंपा। विद्यापति द्वारा स्थापित राधा के महत्व को आने वाले कृष्णभक्त कवि नकार नहीं सके।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी साहित्येतिहास लेखन परंपरा में नाभादास का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्येतिहास लेखन परंपरा में नाभादास का योगदान उनके ग्रंथ 'भक्तमाल' के कारण है।

'भक्तमाल' में नाभादास ने लगभग 200 से अधिक छंदों में 200 कवियों की जीवन-वृत्त संगृहित किया है। इसमें कबीर, तुलसी, सूर, पीपा, धन्ना, मीरा, परमानन्ददास इत्यादि प्रमुख हैं।

नाभादास ने इन भक्त कवि के जीवन की अलौकिक घटनाओं का वर्णन कर उनके महत्व को पाठक के मन में उतारने का प्रयास किया है।

हिन्दी में चरित लेखन परंपरा का विकास 'भक्तमाल' से ही माना जाता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

है। नाभादास की इस कृति को भक्ति ग्रंथों में भी गिना जाता है।

समग्रतः नाभादास कृत भक्तमाल हिन्दी साहित्येतिहास परंपरा का महत्वपूर्ण सन्दर्भ ग्रंथ है। जिसमें नाभादास के 'काव्य' संबंधी विचार भी मिल जाते हैं। भक्तमाल हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की अनौपचारिक परंपरा का प्रथम ग्रंथ माना जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(घ) निराला की कविता 'तुलसीदास' का 'प्रतिपाद्य'

निराला की लंबी कविता तुलसीदास उनके सांस्कृतिक चिंतन पर आधारित है। सरोजस्मृति के आत्ममंथन और राम की शक्ति पूजा की शक्ति साधना के बाद निराला तुलसीदास कविता में 'सांस्कृतिक अस्मिता' पर चिंतन करते हैं।

कविता के तीन भाग हैं। प्रथम भाग में मध्यकाल में भारत के सांस्कृतिक पतन का चित्रण है। विदेशी आक्रमणों से आक्रांत भारतीय समाज की सांस्कृतिक चिंताएँ तुलसीदास के अन्दर यह प्रेरणा भरती हैं कि सांस्कृतिक उद्धार किस प्रकार हो।

कविता के दूसरे भाग में तुलसी की चित्रकूट यात्रा वर्णित है। और अंतिम भाग में तुलसीदास का रत्नावली से प्रेम,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रत्नावली द्वारा तुलसी को धिक्कारना और उसके बाद तुलसी का कर्मपथ में बढ़ना और उनकी आत्मज्ञान प्राप्ति की घटनाएँ वर्णित हैं।

इस कविता में निराला के तुलसी वर्णव्यवस्था के समर्थक नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति के 'मूल' के संरक्षक के रूप में वर्णित हैं। निराला रूढ़ियों और वर्णव्यवस्था के विरोधी 'तुलसीदास' की सर्जना करते हैं। वे सामंती समाज का भी तिरस्कार करते हैं।

समग्रतः 'तुलसीदास' कविता निराला की छायावादी स्वच्छन्द और प्रयोगशील जीवन दृष्टि से प्रेरित कविता है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तारसप्तक का प्रकाशन 1943 में हुआ। इसके प्रकाशन के साथ ही हिन्दी काव्यांदोलन में नयी कविता के 'प्रयोगवाद आंदोलन' का प्रारंभ माना जाता है।

तारसप्तक में सात कवियों के कविता संग्रह प्रकाशित हुए। इनमें 'अज्ञेय', 'रामविलास शर्मा', 'नेमिचन्द्र जैन', 'मुक्तिबोध' तथा 'भारत भूषण अग्रवाल' प्रमुख हैं।

प्रयोगवाद आंदोलन अज्ञेय की 'काव्यानुभूति' का अभिव्यक्त रूप है। यह आंदोलन 'प्रयोग' को ही साध्य मानता है।

इनकी कविताओं में 'भोगे हुए यथार्थ पर बल', स्वानुभूति, यथार्थ के प्रति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अनुभव दृष्टि', 'यौन-कुण्ठाओं का प्रकल्प', 'नवीन प्रतिमानों की खोज', 'शब्द का महत्त्व' इत्यादि आधार न शैल्पिक विशेषताएँ कविता के केन्द्र में आ गयीं।

कुलमिलाकर तारसप्तक का प्रकाशन हिन्दी काव्यधारा में 'प्रयोग' को महत्त्व देने और नयी काव्यधारा 'प्रयोगवाद' के जन्म देने के कारण महत्त्वपूर्ण है। इसी महत्त्व के कारण तारसप्तक के कवियों को 'नवीन राहों के अन्वेषी' कहा गया।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति-चेतना के संदर्भ में विनयपत्रिका का अनुशीलन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विनयपत्रिका तुलसीदास जी द्वारा उनके आराध्य राम या ब्रह्म को लिखा गया विनय पत्र है। विभिन्न समीक्षक इसे संसार का सर्वोत्कृष्ट विनयग्रंथ मानते हैं।

विनयपत्रिका में तुलसीदास जी की भक्ति-भावना, रामचरितमानस से अधिक तीव्र और प्रपत्तिमूलक भावना के साथ उपस्थित है।

वस्तुतः गोस्वामी तुलसीदास का वैचारिक आधार रामानुजाचार्य द्वारा प्रवर्तित विशिष्टाद्वैतवादी दर्शन है जिसमें ब्रह्म या अपने आराध्य की भक्ति प्रपत्तिमूलक दास्य भावना से करना सर्वश्रेष्ठ मार्ग माना गया है।

यह प्रपत्तिमूलक भाव रामचरितमानस

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में भी है पर विनयपत्रिका में तुलसी का भक्त हृदय अपने आराध्य की भक्ति में भाव-विभोर होना उपस्थित हुआ है।

विनयपत्रिका में वर्णित भक्ति-भावना की प्रमुख विशेषता है गोस्वामी जी की राम के प्रति अनन्य व अकंपित आस्था। तुलसी के राम जगउद्धारक हैं यह आस्था निम्न पंक्तियों में स्पष्ट हुयी है-

" मैं अपराध सिंधु करुनाकर, जानत अन्तरजामी
तुलसीदास भव-व्याल ग्रसित तव सरन-उरग रिपुगामी "

विनयपत्रिका में तुलसीदास की भक्तिभावना का दूसरा प्रमुख गुण है 'दैन्य'। तुलसी राम के चरणों में अनन्य भाव से भक्ति के लिए उपस्थित हुए हैं।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्यापकता और उदारता विनयपत्रिका में अभिव्यक्त भक्ति भावना की एक अन्य विशेषता है। यह भक्ति भावना किसी संप्रदाय की विरोधी नहीं है बल्कि समन्वय चेतना से युक्त है।

समग्रत: विनयपत्रिका में तुलसीदास की भक्ति भावना अपनी सर्वांगता और भावना की गहनता के साथ उपस्थित हुयी है।

10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रीतिकाव्य पर ललित कलाओं का प्रभाव किन रूपों में दिखाई पड़ता है? विवेचना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रीतिकाल का समय रीतिकालीन काव्य के साथ ललित कलाओं के विकास का समय भी है। इसमें संगीत कला, चित्रकला आदि प्रमुख है। जिसका स्पष्ट प्रभाव रीतिकाव्य में मिलता है। यह प्रभाव इसलिए भी अधिक है क्योंकि रीतिकाव्यधारा मुगलकाल की बारीक पसन्दी मिज़ाज के समानान्तर चलती है।

रीतिकाल में संगीत का विकास अत्यधिक हुआ। दरबारों में नये नये रागों की सर्जना हुयी, यह प्रभाव रीतिकाव्य में भी मिलता है कवियों ने दोहे जैसे छंदों में भी पूर्ण संगीतात्मकता उत्पन्न करने के प्रयास किए हैं। उदाहरणार्थ-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

“झनक झनक / भर रही / तार तानिन की
छनक छनक / तामें छनक / चुरीन की”

इसी तरह चित्रकला की स्वर्ण शैली, सुनहरी पानी प्रयोग की जगमगाहट रीतिकाव्य में भी मिलती है। यथा-

“अंग अंग नग जगमगती, दीपशिखा सी देह
दिया बुझाये ह्वै रहै, बड़ो उजेरो गेह”

रीतिकाव्य के कवियों पर ललित कलाओं का अत्यधिक प्रभाव दिखता है। वे सम्पूर्ण जीवन को ही ललित कलाओं के प्रभाव से निर्मित घोषित करते हैं। यथा-

“तन्त्रीनाद कवित्त रस, सरस राग रतिरंग
अनबूड़े बूड़े तिरे, जे बूड़े सब अंग”

स्पष्ट है रीतिकाव्य में ललित कला का प्रधान है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) भीष्म साहनी के उपन्यासों में निहित सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिये।

~~भीष्म~~ भीष्म साहनी ~~प्रेमचंदोत्तर~~ हिन्दी-उपन्यासधारा के प्रमुख कवि हैं जिनकी दृष्टि गहन सामाजिक चेतना से निर्मित है।

भीष्म साहनी की सामाजिक चेतना का प्रमुख पहलू उनकी गैर-साम्प्रदायिक समाजनिष्ठ दृष्टि है। वे वंचित वर्गों और नारी वर्ग की समस्याओं को भी अपने उपन्यासों में आवाज़ देते हैं।

भीष्म साहनी ने अपने उपन्यास 'तमस' में भारत की सांप्रदायिक समस्या का गहन विश्लेषण किया है और निष्कर्ष के रूप में सभी धर्मों के सांप्रदायिक तत्व, राजनीति का अवसरवादी रूप, सांप्रदायिकता में सर्वाधिक प्रभाव वंचित, कमज़ोर वर्गों पर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2,
दूरभाष : 8448485518, 011-4753…

पटना, सांप्रदायिक मूल्यों का पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचरण आदि को बताया है।

अपने उपन्यास 'कड़ियां' में उन्होंने पारिवारिक ढाँचे के भीतर नारी दमन को बताया है। और उभरती हुयी नारी की तस्वीर भी खींची है जो अधिकार सम्पन्न है।

भीष्म साहनी के उपन्यास 'झरोखे' और 'नीलू, नीलिमा, नीलोफर' भी उनकी गहन सामाजिक चिंतन से अनुप्राणित हैं। पुरुषों की बिखरती महत्वकांक्षाएँ तथा प्रेम का परिवारों द्वारा दमन इन उपन्यासों का मूल विषय है।

समग्रतः भीष्म साहनी एक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

गैर-साम्प्रदायिक दृष्टिकोण के साथ सामाजिक विमर्श को उपस्थित करते हैं। वे मानते हैं कि इतिहास, संस्कृति, धर्म के यथास्थितिवादी मूल्यों से केवल यथार्थवादी दृष्टि के साथ ही उबरा जा सकता है।

8½ / 15